अमृता शेरगिल की सृजनात्मक आंतरिक प्रेरणा

करुणा
शोधार्थी
(चित्रकला विभाग)
वनस्थली विद्यापीठ,राजस्थान

सृजनात्मक आंतरिक प्रेरणा के प्रवाह को रोककर रखना कुछ समय के लिए संभव हो सकता है, परन्तु उसे हमेशा के लिए नहीं रोका जा सकता। ऐसी कोशिश होने पर सृजनात्मक आंतरिक प्रेरणा की प्रवाह गति बाँध तोड़कर बाढ़ की तरह अनियन्त्रित वेग धारण कर लेती है। यह सृजनात्मक प्रवाह गति अमृता शेरगिल के कलात्मक संसार में व्यक्त है। उनके सृजनात्मक चित्रों में भारतीय संवेदना की आंतरिक प्रेरणा की प्रवाह निरन्तर गति से बहती रही है। सृजन शब्द में मौलिकता का बोध होता है। जब कोई कलाकार किसी वस्तु की रचना करता है तो उसे सृजनशील की संज्ञा दी जाती है। सृजनात्मकता कलाकार के अंदर विद्यमान रचनात्मक प्रवृति की योग्यता है। कलाकार ही अपनी सृजनात्मक आंतरिक प्रेरणा द्वारा कलाकृति को उचित रूप प्रदान करता है। सृजनात्मक अभिव्यक्ति एक स्वतन्त्र विचार प्रक्रिया है। क्योंकि इसमें भावनाओं और सहज आनंद का मणि–कंचन संयोग हैं। सृजन कुदरत की देन है। यह कलाकार की आंतरिक प्रेरणा से उत्पन्न होती है। सृजन तो मनुष्य के स्वभाव में आदिम युग से बसी हुई है। और इस सृजनात्मक क्रिया के तीन स्पष्ट स्वरूप है–कल्पना, प्रतिभा व आंतरिक प्रेरणा। साधारणतः प्रेरणा शब्द का अर्थ ''किसी को किसी कार्य में प्रवृत्त करने की क्रिया। अतः प्रत्येक मनुष्य के अवचेतन में सृजनात्मक आंतरिक प्रेरणा की शक्ति अंतर्निहित होती है। जब कलाकार में सृजनात्मक आंतरिक प्रेरणा जन्म लेती है तब उसकी प्रतिभा, अनुभव, ज्ञान साधनों की तैयारी आदि से कलाकृति का सृजन होता है। अतः अमृता शेरगिल की आंतरिक प्रेरणा जितनी संवेदनशील थी उतनी ही सृजनशील भी थी। सामाजिक बिम्बों के सृजनात्मक निरुपीकरण में अमृता शेरगिल ने दरअसर अंतर्मन संवेदना और भीतर की अपनी बेचैनी को लगभग सभी स्तरों पर जिया हैं। चित्रकार अमृता शेरगिल ने अपने आस–पास के लोगों के दुख, तकलीफ और संकटों का सामना किया तथा ग्रामीण लोगों के भोले–भाले मन, सादे रहन–सहन एवं प्रकृति के साथ रमने वाले जनजीवन को उन्होंने सरल व सहज आकारों में अपनी आंतरिक प्रेरणा व अनुभव से कैनवास पर सृजित किया है।

अमृता शेरगिल ने अपनी सृजनात्मक आंतरिक प्रेरणा व कल्पना से समाज की दयनीय दशा को व भारतीय संस्कार को, गरीब मजदूर, स्त्री के साथ होने वाले अन्याय को अपनी कलात्मक कल्पना व सृजनात्मक भाक्ति का हिस्सा बनाया। अतः कलात्मक कल्पना ही वह शक्ति है जिसके आधार पर कलाकार अपनी नवीन सृष्टि को रूप आकार प्रदान करता है। कला के क्षेत्र में कलात्मक रचनात्मक कल्पना का ही योग हैं। कला कोई विशेष प्रकार का सृजनात्मक कार्य नहीं है। प्रत्येक मनुष्य की हर कृति कला हो सकती है यदि उसे प्रेम व तादात्म्य (Empathy) से किया जाए। सृष्टि में विद्यमान हर वस्तु व घटना कलात्मक सौंदर्य से पूर्ण होती है यदि उसे निजी अंह को भूल कर तादात्म्य से अनुभव किया जाए। अमृता शेरगिल जैसे बहुत ही कम कलाकार होंगे जो बाह्य प्रलोभन से विचलित हुए बिना अपने कलात्मक ध्येय पर अटल रह कर अजीवन तादात्म्य के साथ वास्तविक जीवन को सृजित करते रहे। अतः वास्तविक कलाकृति की रचना करने के लिए प्रतिभाशक्ति का बलिष्ठ ज्योतिबिन्दु आवश्यक है। अमृता शेरगिल एक प्रतिभासम्पन्न चित्रकार है जिन्होंने अपनी कलाकृति में भारतीय समाज के मूल दबावों व जीवन की कुंठाओं का वास्तविकता से परिचय दिया है। उनकी प्रतिभाशक्ति का बलिष्ठ ज्योतिबिन्दु दैनिक जीवन की अनुभूतियों की ओर इशारा करता है। उन्होंने भारतीय ग्रामीण महिलाओं को चित्रित करने का और भारतीय नारी की वास्तविक स्थिति को चित्रित करने का जो प्रयत्न किया वह अत्यन्त सराहनीय है। अपनी बौद्धिक और तर्किक क्षमता के द्वारा ही अमृता अपने विचारों एवं कल्पनाओं को सृजनात्मक रूप प्रदान कर पायी, तथा नवीन परिस्थितियों के साथ समायोजन करने में समर्थ हो पायी। व्यक्ति के अंदर विद्यमान इस मौलिक योग्यता और शक्ति को ही मनोवैज्ञानिको ने सृजनात्मकता कहा हैं। ''क्रो व क्रो के शब्दों में 'सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।'' अतः कलाकार रंग, रेखा या चित्र में अर्थात कलात्मक रूप या सृजनात्मक रूपों में अपने विचारों की अभिव्यक्ति का लास्य मौलिकता से स्वतंत्रतापूर्वक प्रकट करता हैं। सृजनात्मकता का अपना स्थान हैं बचपन की भावनाएँ कल्पना शक्ति के अपने वरदान की तरह ही जिधर मार्ग पाती हैं वह निकल जाती हैं। हवा की तरह वे आती हैं, और जाती हैं, मानव निर्मित कोई कानून नहीं मानती। स्वतः स्फूर्त होना ही उनका धर्म हैं। वैसे तो बचपन से ही बालकों में सृजनात्मकता के लक्षण दिखाई देते है, जो उसे अपने आस–पास के वातावरण से रचनात्मक प्रेरणा देते है। ''टैगोर के अनुसार वातावरण का प्रभाव मन पर अवश्य ही पड़ता है।'' अतः अमृता शेरगिल अपनी आंतरिक प्रेरणा व मानसिक योग्यता के अनुसार बचपन (छः वर्ष की आयु) से ही परियों की कहानी को सुनकर रंगीन चॉक के द्वारा उनको चित्रित करने लगी थी, (देखिए चित्र सं. 1) स्मरण, विचार करने लगी, समझने लगी, ध्यान लगाने लगी और जो वस्तुएँ उनको रूचिपूर्ण लगती उसको वह अपनी आंतरिक

प्रेरणा से मौलिकता के साथ सृजित करने लगी थी। अतः अमृता शेरगिल अपने चंचल व जिज्ञासु स्वभाव से अपने आंतरिक भावों को व्यक्त करने लगी थी। अमृता ने अपनी सृजनशीलता का प्रकटीकरण समुचित स्थान व वातावरण में रहकर ही किया। बचपन में वह हंगरी के ग्राम्य वातावरण व कलाकारों से प्रेरणा लेती और अपनी उस आंतरिक प्रेरणा को कैनवास पर रेखांकित कर देती। इसी तरह अमृता भारतीय परिवेश के वातावरण में भी ग्रामीण लोगों की सादगी व कलात्मक संस्कृतिक केन्द्रों से प्रेरणा लेकर सृजनात्मक कार्य करती रही। अतः सृजनात्मकता की परख उपयुक्त स्थान, समय और वातावरण में ही सम्पन्न होती है।

चित्र सं. 1

चित्र सं. 2

अमृता शेरगिल की कलात्मक आंतरिक प्रेरणा मानव के दैनिक जीवन से प्रेरित है। (देखिए चित्र सं. 2 'हल्दी पीसने वाली') उनके चित्रों में मानव सौंदर्य की अभिव्यक्ति व सामाजिक मानवीय संवेदनाओं का ताना–बाना है, जो उनकी आंतरिक प्रेरणा का निचोड़ हैं। अमृता की कलात्मक आंतरिक प्रेरणा भारतीय नारी हृदय के ईद–गिर्द घूमती रही। वह नारी की मनोवैज्ञानिक दयनीय दशा को अपनी आंतरिक प्रेरणा व संवेदनीय हृदय के साथ कैनवास पर सृजित कर पायी। अतः अमृता शेरगिल ऐसी पहली कलाकार थी जिसने सामाजिक संदर्भों को मौलिकता के साथ कैनवास पर उकेर दिया। अमृता की सृजनात्मक आंतरिक प्रेरणा अजन्ता के विशाल भव्य भित्ति चित्रों को देखकर प्रेरित हुई और उन्होंने अपने कलात्मक संसार में यहीं से एक नवीन मोड़ का सृजन किया। उन्होंने अजन्ता, पहाड़ी चित्रों व दक्षिण भारतीय मन्दिरों की सरल और सपाट कोमल रंगों की प्रतिकात्मक शक्ति को समझा और बसोहली शैली के पहाड़ी चित्रों की सरल योजना से विशेष प्रेरणा ली। इस प्रेरणा से उनके चित्रों में वास्तविता का अभाव आ गया जिसको उन्होंने अपनी कला का सृजनात्मक रूप बनाया। अमृता के उत्साह, निष्ठा, साधना एवं महान् कलाकृतियों के सृजन की इच्छा शक्ति ने इन्हें अल्पायु में ही वह सब करा दिया जिसे कुछ कलाकार जीवन के अंतिम वर्षों तक नहीं कर पाए। परम्परागत भारतीय चित्रकला, भित्ति चित्रण एवं पाश्चात्य कला प्रविधियों एवं प्रवृत्तियों के मेल से इन्होंने मौलिक शैली की नींव रखी जिसमें विषय भारतीय और शैली विदेशी इनका आधार बनी। उन्होंने एक बार कहा था : 'जैसे ही मैंने अपने पैर भारत की धरती पर रखे, मेरी पेंटिंग में केवल विषय और भावना की दृष्टि से ही परिवर्तन नहीं आया अपितु तकनीकी अभिव्यक्ति भी अपेक्षाकृत अधिक आधारभूत ढंग से भारतीय हो गई। तभी मुझे अपने कलात्मक उद्देश्य की अनुभूति हुई, मुझे अपने चित्रों में भारतीय लोगों, खासकर गरीब भारतीय लोगों, के जीवन का विश्लेषण करना है, अनंत समर्पण और सहिष्णुता की मौन छवियों को चित्रित करना है, कुरूपता में भी अद्भुत रूप से सुंदर दुबले पतले सांवले रंग वाले शरीर को दर्शाना है, उनकी उदास आँखों का मुझ पर पड़ने वाले प्रभाव को कैनवास पर उतारना है।'' अमृता अपनी कृतियों में गहन तटस्थता, पूर्वाग्रहों से मुक्ति और वैज्ञानिक व्यक्तित्व को संजोने में पूरी तरह सक्षम रही। अमृता ने मानवीय समाज की समस्या को सृजित करने में अपनी अभिरूचि अभिव्यक्त की। जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को इसलिए करता है क्योंकि उसमें उसकी अभिरूचि है तो ऐसा कहा जाता है कि व्यक्ति के अंदर आंतरिक अभिप्रेरणा (Intrinsic Motivation) है। यह अभिप्रेरणा अमृता शेरगिल को भीतर से सृजनात्मक कार्य करने को प्रेरित करती रहती। प्रेरणा किसी भी प्रतिक्रिया की तत्परता का बोध कहा जा सकता है। यह एक ऐसी भावना है जो हमें उस प्रतिक्रिया को करने के लिए उत्तेजित करती है, जिसके लिए कलाकार तत्पर होते है। जब कलाकार को उसकी प्रेरणा मिल जाती है तो वह कलात्मक सृजन करता है।

चित्र सं. 3

कलाकार की सृजनात्मक आंतरिक प्रेरणा में बिम्ब चेतना की रचनाधर्मिता की उस शक्ति का सर्वाधिक योगदान रहता है जिसे हम कल्पना कहते है। कल्पना एक ऐसी अंतःक्रिया है जिसमें इंद्रिया संवेद्य सम्पूर्ण बाह्य प्रत्यक्ष, अनुभूति, संवेदना, स्मृत्याभास और सौंदर्येच्छा से रसायनीकृत होकर अप्रत्यक्षतः मानस अवकाश में अपने चित्रों के सहारे एक समान्तर दुनिया का कलात्मक सृजन

रचता है। बिम्ब सृजन की व्यापक ताकत है। "हर्बर्ट रीड के अनुसार–'कलाकार अपनी अनुभूतियों के लिए प्रतीकों की रचना करता है और तब कलाकृति का सृजन करता है।" अतः अमृता शेरगिल ने अपनी कलाकृति में (देखिए चित्र सं. 3 'प्राचीन कथावाचक') गाँवों के वृक्ष, पशु–पक्षी, घर, आँगन, चूल्हा–चौका आदि कलात्मक बिम्ब चेतना के आधार बनाये। मानवीय संबंधों की ऊष्मा को तपिश देते ये बिम्ब अमृता के कलात्मक सृजन का हिस्सा हैं। अमृता शेरगिल का सृजनात्मक कला संसार नई संभावनाओं को एक जोरदार आहट देने वाला है। इनका कलात्मक संसार दर्शक के हृदय में करूणार्द्र भाव उत्पन्न करता है।

अतः कल्पना शक्ति और रचना संबन्धित निपुणता के मध्य आंतरिक प्रेरणा का गहरा सहयोग होता है। अमृता ने अपनी आंतरिक प्रेरणा से मानवीय आत्मा की गहराईयों को सौंदर्यात्मक रूप से चित्रित किया है। इन गहराईयों को क्षणिक दृष्टिपात से जाना नहीं जा सकता। अतः कला की सौंदर्य अभिव्यक्ति में कलाकार के गुणों का विशेष योगदान रहता है। कला मानस के उल्लास और विषाद की अनायास होने वाली सहज अभिव्यक्ति है, वह दूब की तरह मन में उगती है उसे रोपा नही जा सकता। रचनाकार के संवेदन तन्त्र का स्पन्दन वृत जितना लहरीला होकर फैलता जाएगा, उतना ही वह देश काल की सीमा का सृजनात्मक वैशिष्ट्य उत्पन्न कर पायेगा। वैसे सृजन में वैशिष्ट्य तो आना ही चाहिए। सृजन मूल्यवान ही तब माना जाता है। जब वह अपने पूर्ववर्तियों और निकटस्थ पूर्ववर्तियों से विशिष्ट हो। सृजन में यह विशिष्टता तब ही आती है, जब प्रवहमान सत्यों को अपने इर्द–गिर्द घिरी दर्प–दीनता, आस्था और अनास्थाओं के प्रसंगों की समाहित करने की सजगता कृतिकार में हो। अमृता ने अपने आस–पास के इन प्रसंगो से प्रेरित होकर अपनी सृजनात्मक आंतरिक प्रेरणा को कैनवास पर सृजित किया। अतः "प्लेटो ने कला का मर्म आंतरिक प्रेरणा से माना है।" ऐसा कलाकार नकलची नहीं होता बल्कि प्रेरक होता है। सच्चे सौंदर्य का निवास मानव के अंतःकरण में होता है। वहीं से जब उसे प्रेरणा मिलती है तभी कलाकार सच्ची कला का सृजन कर पाता है। अतः अमृता ने अपनी बौद्धिक कुशलता, प्रतिभा, कल्पना, कला ज्ञान आदि के गुणों को अपनी आंतरिक प्रेरणा का आधार बना कर कलात्मक सृजन का सच्चा स्वरूप रेखांकित किया। कलाकार के आंतरिक मन में सृजन अंततः कल्पना और माध्यम की अंतःक्रिया रहती है। ऐसा स्थिति में कलाकृति रचनाकार की उस साधना को सामने लाती है जो उसने कल्पना और माध्यम के तनाबों में से रास्ता बनाकर दोनों के पारस्परिक विलय के लिए की थी। कल्पना और माध्यम की अंतःक्रिया में व्यक्त होकर कलात्मक सृजन किया जाता है। कलाकार सृजनात्मक कार्य अंतःप्रेरणा के क्षणों में रचता है। **(देखिए चित्र सं. 4 'दो नारी')** अमृता शेरगिल की अंतःप्रेरणा से सृजित कलाकृति में हमें ऐसी महिलाओं की जिंदगी की झलक दिखायी देती है जो अपने समय से कहीं पीछे थी, और परम्पराओं में बंधी रहती थी। अमृता शेरगिल की सृजनात्मक आंतरिक प्रेरणा अनुभूतियों से रूप, कल्पना से रंग और भावजगत से सौंदर्य पाकर साकार हुई। अमृता शेरगिल की अनुभूति प्रत्यक्ष सत्य ही नहीं, अप्रत्यक्ष सत्य का भी स्पर्श करती है। उनका स्वप्न वर्तमान ही नहीं, अनागत को भी रूपरेखा में बांधता है। उनकी भावना यथार्थ ही नहीं, सम्भाव्य यथार्थ को भी साकार रूप देती है। इस तरह मनुष्य की अनुभूति का निर्माण उसके तमाम भौतिक और सामाजिक वातावरण के टकराव में होता है और मनुष्य चाहे लाख कोशिश करे, वह अपने इस परिवेश के दबाव से असंयुक्त नहीं रह सकता। अतः अमृता शेरगिल का तनाव भरा जीवन उनकी कलाकृति में एक परिष्कृत रूपाकार ग्रहण कर, उस ऊर्जा का निर्माण करता है जिससे मनुष्य और समाज की मान्यताओं को बदला डालने की क्षमता उनके सृजनात्मक संसार में झलकती है। सृजन के बारे में गुरदयाल सिहँ कहते है–"सृजन का सुख सृजन के बिना और किसी तरह भी नहीं मिलता।" अतः सृजनात्मक क्रिया कलाकार की आंतरिक प्रेरणा से निकली अद्‌भुत सौंदर्यबोध की रचनात्मक क्रिया है। जब सृजनात्मक चरण ही सृजन–चरण में रूपांतरित होता है–अलौकिक, सौंदर्यबोधात्मक या विशेष होते हैं। अमृता शेरगिल अपनी सृजनात्मक आंतरिक प्रेरणा की भावनाओं को भारतीय परिवेश में विशिष्ट कलाकृति में प्रदर्शित कर पायी। अतः कलाकार "बाहर से संसार को देखता है, अनुभव से गुजरता है, तब वह अनुभव के संसार को अनजाने ढ़ग से अननुमेय दिशा में प्रभावित होकर अपनी कलाकृति को सृजनात्मक रूप देता है। अमृता शेरगिल ने पौर्वात्य व पाश्चात्य संसार की आंतरिक प्रेरणा से प्रभावित होकर अपनी कलाकृति का निर्माण किया। उनके सृजनात्मक संसार में हंगरी परिवेश का बचपन व भारतीय जन–जीवन की गरिमामय सृजन शक्ति का विकसित रूप है। अमृता शेरगिल के सृजन कर्म की अभिव्यक्ति में मानवीय भाव, चित्रित पात्रों की असहाय, निरीह, उदास तथा घुटन भरे दैनिक जीवन का जीता–जागता प्रतिबिम्ब है। अमृता शेरगिल के चित्र केवल स्वानुभूतियों और अंतःप्रेरणा की ही अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि व्यक्ति तथा समाज के स्थाई संकलित अनुभवों और मूल्यों के संयोजन का प्रतिफल है।

चित्र सं. 4

अतः सृजनात्मक आंतरिक प्रेरणा में प्रत्यक्षीकरण व अनुभव का भी अधिक महत्व है। प्रत्यक्षीकरण में चयन और प्रवृत्ति की उत्तम प्रतिनिधि चित्रकर्त्री अमृता शेरगिल है। उन्होंने बसौहली और अजन्ता के बिम्बों को चित्रकार गॉगिन के चमकीले रंगों तथा आकृतिरूपों से समन्वित कर दिया। अतः उनका प्रत्यक्षीकरण दो सांस्कृतिक आदर्शो का कान्त संयोग करता है। उनकी निजी प्रणय–असफलता तथा भारत की उपनिवेशी गरीबी ने उनकी अंतदृष्टि में उदासी और व्यथा का रूझान भी पाग दिया। अतः वे आधुनिकों में सबसे ज्यादा आधुनिक और भारतीय में सबसे ज्यादा सामाजिकतया सचेतन भारतीय सिद्ध हुई। अतः कलाकार की अभिप्रेरणा प्रत्यक्षीकरण को गत्यात्मक और परिवर्तनशील बनाती है तथा अभिप्रेरणा के अलावा कल्पना भी प्रत्यक्षीकरण को सृजनात्मक तथा आवेगात्मक बनाती है। अभिप्रेरणा सृजन की शक्ति होती है। सृजन कला की एक प्रवृत्ति है और प्रत्येक प्रवृत्ति का स्त्रोत अंतप्रेरणा में है। अंतप्रेरणा मनुष्य के अंदर स्थित है। इस अंतप्रेरणा को सृजन की प्रक्रिया कहा जाता है।

अतः कलाकार जब किसी कलाकृति का सृजन करता है तब वह उस कलाकृति में स्वयं तन्मय या विभोर हो जाता है। कलाकार की कृति उसकी आंतरिक प्रेरणा का पक्ष होती है। जैसे वर्षा की पहली बूदें जब दहलीज़ पर पड़ती है तो वे किसे प्रसन्न नहीं करती। बूदों की ध्वनि में एक राग का कलात्मक चित्रण होता है जो कलाकार की आंतरिक प्रेरणा का स्त्रोत बनता है। इसी तरह अपनी सृजनात्मक आंतरिक प्रेरणा से कैनवास पर रंगों और रेखाओं के ज़रिये समय को चित्रित करने वाली अमृता शेरगिल ऐसी चितेरी है जिन्होंने कला में निरन्तर प्रयोग किये उनके बनाए चित्रों में सामाजिकता का सर्वथा नया ताना–बाना बुना गया है। इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि अमृता शेरगिल आधुनिक कला प्रवृत्तियों में नए आयाम देने के अपने प्रयासों के चलते बहुत कुछ ऐसा किया है जो उनकी सृजनात्मक आंतरिक प्रेरणा की देन हैं।

सन्दर्भ सूची :–

- शर्मा, योगेन्द्र कुमार, ''प्रतिभासम्पन्न एवं सृजनात्मक बालक'', कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2009
- जोशी, डॉ. ज्योतिष, ''समकालीन कला'', (विजय कौ ाक : सृजनात्मक ग्लास कला की खोज में), अंक–24, फरवरी–मई, 2003, ललित कला अकेदमी, रविंद्रभवन, नई दिल्ली।
- समर्थ, भाऊ, ''चित्रकला और समाज'', परिमल प्रका ान, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1988
- शर्मा, विश्वमित्र, ''बीसवीं सदी के 100 प्रसिद्ध भारतीय'', राजपाल एण्ड सन्स, परिर्वाधत संस्करण, 2004
- सिंह, अरूण कुमार, ''आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान'', मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, चतुर्थ संशोधित संस्करण, 2006
- वशिष्ट, विजेन्द्र कुमार, ''बाल मनोविज्ञान'', अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2004
- उपाध्याय, विनय, ''कला समय'', (नर्मदा प्रसाद उपाध्याय : रूप के पार बसा है जीवन का राग), दिसम्बर–जनवरी, 2010, भंवरलाल श्रीवास, भोपाल।
- वाजपेयी, डॉ. राजेन्द्र, ''सौंदर्य'', मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, तृतीय संस्करण, 2004
- भुक्ल, प्रयाग, ''समकालीन कला'', (सच्चिदानन्द सिन्हा : समाज और कला संवेदना), प्रदेशांक–1982, ललित कला अकेदमी, रविंद्रभवन, नई दिल्ली।
- मेघ, रमेशकुन्तल, ''साक्षी है सौंदर्यप्रा ाक'', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संसकरण, 1980

नोट – यह प्रस्तुत चित्र National Gallery Of Modern Art, New Delhi Presents, Exhibition Of AMRITA SHER GIL Paintings **"THE PASSIONATE QUEST"** 31 January to 2 March, 2014, Curated by Yashodhara Dalmia. And www.ngmaindia.gov.in से लिए गये हैं।